अध्याय

01

हम तो एक एक एक करि जाना, संतों देखत जग बौराना - कबीर

JCERT not to be republished

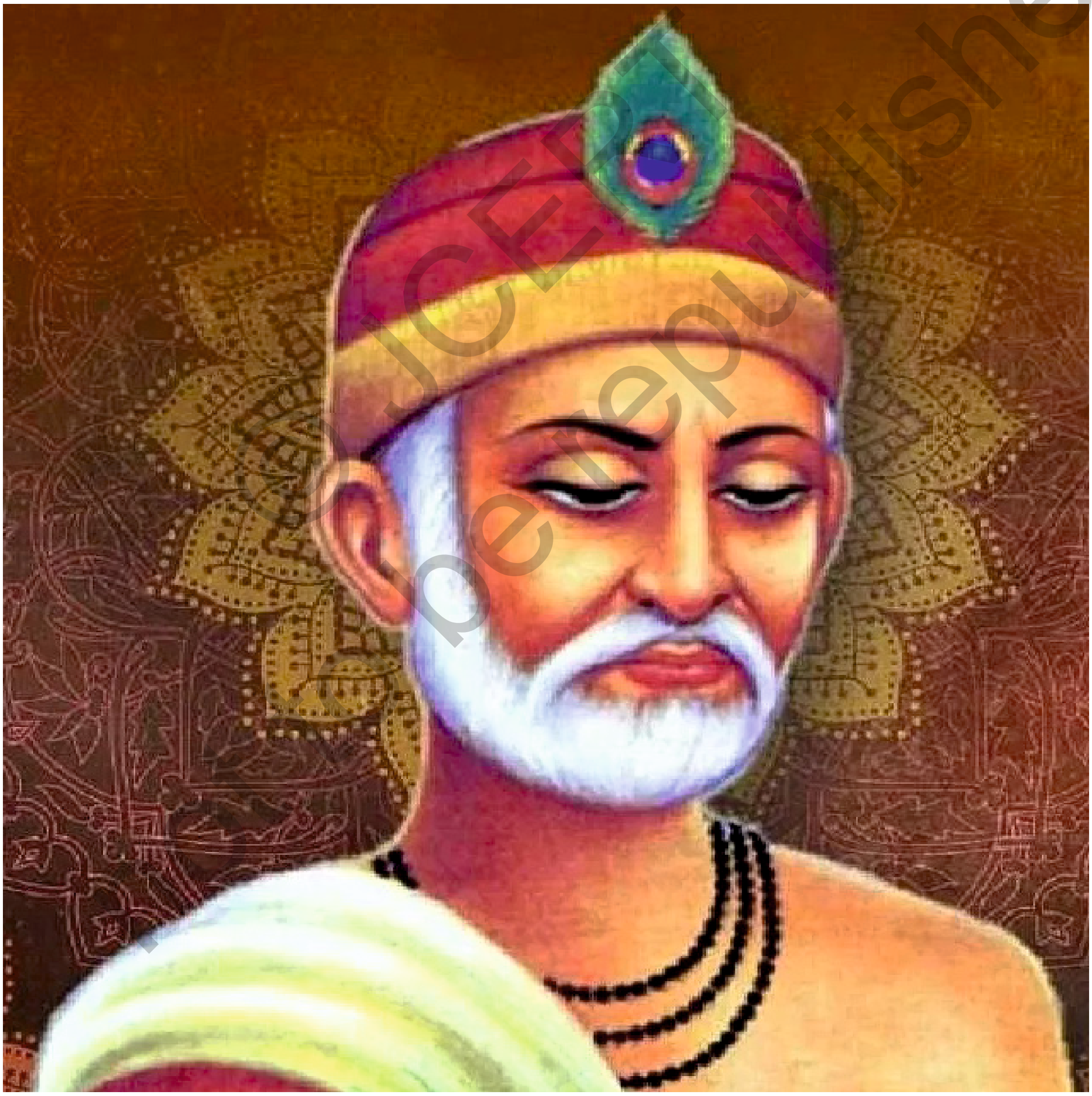

कबीर

कवि-परिचय

1. कबीर का जन्म 1398 ई. में वाराणसी के निकट लहरतारा में हुआ था। उनके माता का नाम नीमा और पिता नाम नीरू था। जनश्रुति के अनुसार वह तालाब के पास एक गठरी में पाए गये थे।

2. वह पढ़े-लिखे नहीं थे।पर अनुभव आधारित ज्ञान उन्हें इतना था कि अपने तर्कों के माध्यम से बड़े-बड़े ज्ञानियों को निरुत्तर कर देते थे।

3. उनके गुरु का नाम रामानंद था।

4. उनकी रचनाएँ साखी,सबद और रमैनी है, जिसे उनके शिष्य धरमदास जी ने 'बीजक' में संकलित किया है।

5. उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त जाति-भेद, कर्म-कांड और छुआ-छूत पर करारा प्रहार किया है।

6. उनके काव्य में सिद्ध, नाथ, जैन और सूफी संतों का प्रभाव परिलक्षित होता है।

7. कबीर शास्त्र की जगह अनुभव आधारित ज्ञान को वरेण्य मानते हैं। वह कर्म-कांड के स्थान पर प्रेम, दया, सहानुभूति आदि मानवीय गुणों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं।

8. उनके काव्य की प्रमुख विशेषता- गुरुभक्ति, ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम, साधु-महिमा, जगत-बोध एवं आत्म-बोध की अभिव्यक्ति है।

9. उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा विभिन्न सम्प्रदायों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है।

10. कबीर की भाषा को पंचमेल खिचड़ी कहा जाता है। जिसमें तत्कालीन सभी भाषाओं का संगम दिखता है। यही कारण है कबीर को हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

11. कबीरदास जी का देहावसान 1518 ई.में बस्ती के निकट मगहर में हुआ।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत पाठ में जयदेव सिंह और वासुदेव सिंह द्वारा संकलित - सम्पादित कबीर वाड़्मय - खंड 2 (सबद) से दो पद लिए गये हैं।

पहले पद में कबीर ने ईश्वर की सर्वव्यापकता पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार सृष्टि के कण-कण में ईश्वर समाया हुआ है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता को जो लोग धर्म और जाति के चश्मों से देखते हैं उनपर कवि ने करारा व्यंग्य प्रहार किया है।

अनेक उदाहरण और दृष्टान्तों के माध्यम से कबीर ने ईश्वर की म्हत्ता का प्रतिपादन किया है।

दूसरे पद में कबीर ने समाज में व्याप्त बाह्याडम्बरों और कुरीतियों पर कठोर प्रहार किया है।

कवीर के अनुसार ईश्वरप्राप्ति के लिए इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है अपितु अपने मन को जिसने सत्य की आभा से आलोकित कर लिया उसको स्वयं ही प्रभुमिल जाते है।

© JCERT not to be republished

वह मानव -समाज को टेढ़े -मेढ़े रस्ते को छोड़ कर सीधे रस्ते पर चलने की प्रेरणा देते हैं,जिसमें लोक -कल्याण का भाव निहित है।

अंत में हम कह सकते हैं कि कबीर अपने समय के सच्चे साधक,समाजसुधारक और कवि हैं। जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में ज्ञान की अलख जगाने का काम किया है।हिंदी साहित्य उनका ऋणी है।

काव्यांश 1

हम तौ एक एक करि जांनां ।

दोइ कहैं तिनहीं कौ दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां।।

एकै पवन एक ही पानीं एकै जोती समानां।

एकै खाक गढ़े सब भांड़े एकै कोहरां सानां॥

शब्दार्थ:-

दोजग- नरक।

पवन- वायु, हवा।

जोती- प्रकाश।

समानां- व्याप्त।

खाक- मिट्टी।

भांड़े- बर्तन।

कोहरा- कुम्हार।

प्रसंग:- प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक ‘आरोह भाग-1’ में संकलित ‘पद’ से लिया गया है। इसके रचयिता संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। इस पद में कबीर ने सृष्टि के कण -कण में एक ही परम तत्व की सत्ता को सभी जगह व्याप्त माना है।

व्याख्या:- कबीर कहते हैं की मैंने भली -भांति हर प्रकार से जाँच -परखकर यह जान लिया है कि की ईश्वर एक ही है। हालाँकि कुछ लोग ईश्वर को जाति और धर्मों में विभाजित कर के देखते हैं। क्योंकि वो वास्तविकता से अलग हटकर संसार में भ्रम फैलाते रहते हैं। इसके कारण वह स्वयं ही अपने आप को नरक में धकेलने का प्रयास कर रहे हैं। कवि के अनुसार इस संसार में एक ही प्रकार का पानी है जिससे लोग अपनी प्यास को बुझाते हैं। एक ही प्रकार की वायु है जो सभी को जीवित रखे हुए है। एक ही प्रकार का प्रकाश है जो सम्पूर्ण वसुधा को प्रकाशवान किये हुए है।

कुम्हार की चक्की पर मिट्टी एक प्रकार की ही होती है भले ही वह उससे तरह -तरह के बर्तनों का निर्माण करता हो। उसी प्रकार से परमात्मा की सत्ता सभी जगह व्याप्त है।

विशेष:-

आत्मा -परमात्मा की सत्ता पर प्रकश डाला गया है।

एक -एक में यमक अलंकर का प्रयोग है।

‘खाक’ और ‘कोहरा’ में रूपकातिशयोक्ति अलंकार है।

सधुकड़ी भाषा का प्रयोग है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश 2

जैसे बाढ़ी काष्ट काट ही काटै अगिनि न काटै कोई।

सब घटि अंतरि तूँ ही व्यापक धरै सरूपै सोई ॥

माया देखि के जगत लुभानां काहे रे नर गरबाना।

निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवानां॥

शब्दार्थ:-

बाढ़ी- बढई।

काष्ट- काठ, लकड़ी।

अगिनि - आग।

घटि - घड़ा, ह्रदय।

अंतरि - भीतर, अन्दर।

व्यापक - विस्तृत।

जगत -संसार।

लुभाना- मोहित होना।

गरबाना- गर्व करना, घमंड।

निरभै- भयमुक्त।

दिवानां- बैरागी, प्रभु भक्ति में पागल।

प्रसंग:- प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित 'पद' से लिया गया है। इसके रचयिता संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। अनेक उदाहरणों के माध्यम से कवि ईश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन करते हैं।

व्याख्या:- कवि कहते हैं कि बढई काठ को काट सकता है पर अग्नि को कोई नहीं काट सकता है। भाव यह है कि परमात्मा ही विभिन्न प्रकार के रूप को धारण कर के हर किसी के ह्रदय में विराजमान है। तो फिर क्यों ये संसार नाना प्रकार के सांसारिक बन्धनों के मायाजाल में फंसा हुआ है और गर्व में डूबा हुआ है। जो इस सांसारिक मायाजाल से मुक्त हो जाता है फिर उसको संसार का कोई भय नहीं होता। अर्थात् जिसने ईश्वर रूपी अमृत का पान कर लिया हो वह हर प्रकार के बन्धनों और भय से मुक्त हो जाता है।

विशेष:-

कवि ने माया -मोह की व्यर्थता पर प्रकाश डाला है।

पद में गेयता एवं संगीतात्मकता है।

अनुप्रास अलंकर की छटा है।

सधुकड़ी भाषा का प्रयोग है।

काव्यांश 3.

1. संतो देखत जग बौराना।

साँच कहों तो मारन धावै,झूठे जग पतियाना॥

नेमी देखा धरमी देखा,प्रात करे असनाना।

आतम मारिपखानहि पुजै, उनमें कछु नहिं ज्ञान॥

© JCERT not to be republished

2. शब्दार्थ:-

जग- संसार।

बौराना- पागल होना।

साँच- सच।

मारन धावै- मारने के लिए दौड़ना।

पतियाना- विश्वास करना।

नेमी- नियमों का पालन करनेवाला।

धरमी- धर्म का पालन करने वाला।

आतम- आत्मा, स्वयं।

पखानहि- पत्थर।

कछु- कुछ।

3. प्रसंग:- प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित 'पद' से लिया गया है। इसके रचयिता संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। इस पद में कवि ने धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बरों पर तीखा प्रहार किया है।

4. व्याख्या:- कवि कहते हैं कि हे महात्माओं संसार की बड़ी विचित्र स्थिति है।ऐसा लगता है की सारे प्राणी पागल हो गये हैं। जब किसी के सामने सच बात कही जाती है तो वह उसको मारने के लिए दौड़ पड़ते हैं। और झूठी बात पर विश्वास कर लेते हैं। मैंने बहुत सारे नियम -धर्म का पालन करने वालों को देखा है जो तडके ही स्नान कर लेते हैं और अपनी आत्मा की पुकार को छोडकर पत्थर की पूजा करते रहते हैं। मेरे दृष्टिकोण से उनमें कोई ज्ञान नही है। वह केवल धर्म के नाम पर ढोंग करते हैं उनका आचरण पवित्र नहीं होता है तो शरीर को पवित्र करने से क्या फायदा ?

5. विशेष:-

कवि ने धार्मिक आडम्बरों पर तीखी चोट की है।

धर्मगुरुओं के पाखंड का पर्दाफाश किया है।

प्रतीकात्मक प्रयोग से भाषा में कसाव उत्पन्न हुआ है।

काव्यांश 4.

बहुतक देखा पीर औलिया,पढै कितेब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतावैं, उनमैं उहे जे ज्ञाना।।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे,मन में बहुत गुमाना।
पीपर पाथर पूजन लागै तीरथ गर्व भुलाना।।

2. शब्दार्थ:-

पीर-औलिया- धर्म-गुरु।

कितेब- ग्रंथ।

मुरीद- शिष्य।

तदबीर- उपाय।

डिंभ धरि- घमंड करे।

गुमाना- घमंड।

पाथर- पत्थर।

© JCERT not to be republished

3. प्रसंग:- प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित 'पद' से लिया गया है। इसके रचयिता संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। इन पंक्तियों में कवि धर्म के तथाकथित ठेकेदारों की पोल खोलते हैं।

4. व्याख्या:- कवि कहते हैं कि उन्होंने ऐसे अनेक ढोंगी धर्मगुरुओं को देखा है जो हर समय कुरान पढ़ते रहते हैं और अपने शिष्यों को परमात्मा को पाने के लिए तरह -तरह के उपाय बताते रहते हैं। जबकि उन्हें खुद खुदा के बारे में कुछ नहीं पता है। वे ढोंगी योगियों पर भी चोट करते हैं जो आसन लगाकर अहंकार धारण किये बैठे हैं और उनके मन में बहुत घमंड भरा पड़ा है। कबीर कहते हैं की लोग पीपल,पत्थर आदि कि पूजा करते हैं और तीर्थ- व्रत कर के अपने मन में बड़ा गर्व का अनुभव करते हैं कि मैंने ईश्वर को प्राप्त कर लिया। लेकिन कवि के अनुसार वह केवल भरम में अपने आप को डाले हुए हैं ईश्वर इस प्रकार के कर्म -कांडों से नहीं प्राप्त होते।

5. विशेष:-

इस पद में कबीर की अक्खड़ता और निर्भीकता का पता चलता है।

पद में गेयता का गुण विद्यमान है।

कर्मकांडों का खंडन है।

काव्यांश 5.

1. टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमान।

साखी सब्दहि गावत भूले,आतम खबरि न जाना ॥

हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कहै रहिमाना।

आपस में दोउ लरि लरि मुए, मर्म न काहू जाना।।

2. शब्दार्थ:-

छाप- तिलक।

अनुमाना- मस्तक पर विभिन्न प्रकार के तिलक लगाना।

साखी साक्षी- दोहा।

सब्द-हि- वह मन्त्र जो गुरु शिष्य को दीक्षा के समय देता है।

आतम खबरि- आत्मा का ज्ञान।

मोहि- मुझे।

लरि-लरि मुए- लड़-लड़ कर मर गये।

मर्म- रहस्य।

काहू न- किसी ने।

3. प्रसंग:- प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित 'पद' से लिया गया है। इसके रचयिता संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। धार्मिक आडम्बरों पर कवि ने व्यंग्य -प्रहार किया है।

4. व्याख्या:- कबीर कहते हैं कि मैंने ऐसे बहुत सारे लोगों को देखा है जो सर पर टोपी लगाकर गले में माला धारण करके माथे पर तरह तरह के तिलक लगाकर अपने आप को

© JCERT not to be republished

ईश्वर का सबसे बड़े भक्त होने का प्रचार करते रहते हैं। लेकिन वो भ्रमित हैं आत्मज्ञान की उन्हें कोई खबर नहीं है। इसी प्रकार से हिन्दू और मुस्लिम अपने -अपने आराध्य को एक दुसरे से बड़ा बताते है। परन्तु इन दोनों को ही ईश्वर के बारे में कोई ज्ञान नहीं है बस अपना वर्चस्व बढाने के लिए दोनों आपस में लड़ते -मरते हैं।

5. विशेष:-

हिन्दू -मुस्लमान के धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया है।

पद में गेयता का गुण सर्वत्र विद्यमान है।

चित्रात्मक भाषा का प्रयोग द्रष्टव्य है।

घर -घर मंतर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।

गुरु के सहित सिख्य सब बूड़े, अंत काल पछिताना।।

कहै कबीर सुनो हो संतो,ई सब भर्म भुलाना।

केतिक कहौं कहा नहिं मानै, सहजै सहज समाना।।

2. शब्दार्थ-

मंतर – गुप्त बात बताना।

महिमा– उच्चता।

सिख्य– शिष्य, चेला।

बूड़े– डूबना।

अंतकाल– अंतिम समय।

भर्म– संदेह।

सहजै– सहज रूप से।

समाना– लीन होना।

3. प्रसंग:- प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित 'पद' से लिया गया है। इसके रचयिता संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। धार्मिक कर्मकांडों का कवि ने इन पदों में विरोध किया है।

4.व्याख्या:- कवि कहते है जो अपने को उच्च मानते हुए घर -घर जाकर झाड़-फूंक करते है।वो स्वयं के साथ-साथ अपने शिष्यों को भी दिग्भर्मित कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि गुरु के साथ उन शिष्यों को भी अपने अंतिम समय में पछताने के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।क्योंकि ये सब लोग भर्म में डूबे हुए हैं।साधना के सरल सच्चे मार्ग को छोड़कर ये लोग आडंबरों में डूबे हुए हैं।कबीर कहते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए कोई विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है, वह तो सहज भाव से ही प्राप्त किया जा सकता है। सहज भाव है कि मानवता के धर्म का पालन करें। जीव के प्रति दया भाव रखें। मानव को मानव समझे और सभी के प्रति सम भाव रखें। सभी के धर्मों का आदर करें। मोह और माया से दूर रहें। मिथ्या और आडम्बर से दूर रहें, यही सहज भाव है।

5. विशेष:-

ईश्वर प्राप्ति के लिए सहज भक्ति मार्ग कवि के द्वारा बताया गया है।

सधुकड़ी भाषा का प्रयोग है।

कवि की निडरता और स्पष्टवादिता की झलक है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

1. कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या -क्या तर्क दिए हैं ?

उत्तर:- कबीर ने ईश्वर को कण -कण में व्याप्त बताया है। इसके लिए उन्होंने निम्न तर्क दिए हैं -

उनका कहना है संपूर्ण विश्व में एक ही पानी है, जिससे लोग अपनी प्यास बुझाते हैं।

सम्पूर्ण विश्व में एक ही प्राण -वायु (आक्सीजन) है, जिसके कारण लोग जीवित हैं।

सारे संसार में एक ही प्रकाश(सूर्य) है, जिससे सभी लोग प्रकाशित हो रहे हैं।

जिसने भी इन सब चीजों का निर्माण किया है वह बिना किसी भेद -भाव के सभी लोगों को ये सारी चीजें सुलभ करा रहा है।ये दर्शाता है कि ईश्वर एक है,भले ही हम लोग उसको अनेक नामों से पुकारें।

2. मानव शारीर का निर्माण किन पंच तत्वों से हुआ है ?

उत्तर:- भारतीय दर्शन तथा योग में पृथ्वी (क्षिति) , जल (अप्) , अग्नि (ताप) , वायु (पवन) एवं गगन (शून्य) को पंचतत्व या पंचमहाभूत कहा जाता है। इन्हीं पंचतत्वों के द्वारा मनुष्य का निर्माण होता है। पंचतत्व को ब्रह्मांड में व्याप्त लौकिक एवं अलौकिक वस्तुओं का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष कारण और परिणति माना गया है।

3. जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटे कोई।

सब घटि अंतर तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।

इसके आधार पर बताइये की कबीर की दृष्टि में ईश्वर का क्या स्वरूप है?

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ है कि बढ़ई काठ (लकड़ी) को काट सकता है, पर आग को नहीं काट सकता, इसी प्रकार ईश्वर घट-घट में व्याप्त है अर्थात् कबीर कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार आग को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता और न ही आरी से काटा जा सकता है, उसी प्रकार परमात्मा हम सभी के भीतर व्याप्त है। यहाँ कबीर का आध्यात्मिक पक्ष मुखर हो रहा है कि आत्मा (ईश्वर का रूप) अजर-अमर, सर्वव्यापक है। आत्मा को न मारा जा सकता है, न यह जन्म लेती है, इसे अग्नि जला नहीं सकती और पानी भिगो नहीं सकता। यह सर्वत्र व्याप्त है।

4. कबीर ने अपने को दीवाना क्यों कहा है ?

उत्तर:- कबीर पूर्ण रूप से परमात्मा रूपी सार को समझ चुके हैं और जो भी व्यक्ति उस ब्रह्म को समझ जाता है वह इस दिन-दुनिया के जंजालों से मुक्त होकर उस सूक्ष्म ब्रह्म की आराधना में लीन हो जाता है।उसे दुनिया की सुध बुध नहीं रहता है।इसी कारण कबीर ने अपने आप को दीवाना कहा है।

© JCERT not to be republished

5. कबीर ने ऐसा क्यों कहा कि संसार बौरा गया है?

उत्तर:- कबीर ने इसलिए कहा कि संसार बौरा गया है क्योंकि इस संसार में जो लोग सच का साथ देते हैं उन्हें लांछन औए प्रताड़ना मिलती है।जो झूठ का सहारा लेते हैं लोग उनकी वाह वाही और सम्मान करते हैं।यही उल्टी संसार की रीत देखकर कबीर ने कहा है कि संसार बौरा अर्थात् पगला गया है।

6. कबीर ने नियम और धर्म का पालन करने वाले लोगों की किन कमियों की ओर संकेत किया है?

उत्तर:- क्योंकि वो लोग अपनी आत्मा को मारकर पत्थर की पूजा में लगे रहते हैं।अर्थात् वो लोग व्यर्थ के कर्म-कांडों में उलझकर जीवन के मुख्य उद्देश्य से भटक जाते हैं। वह सही दृष्टि में यह जानते ही नहीं हैं कि ईश्वर को कैसे खुश और प्राप्त किया जाता है और बाह्यडम्बरों में ही उलझकर रह जाते हैं।

7. अज्ञानी गुरुओं की शरण में जाने पर शिष्यों की क्या गति होती है?

उत्तर:- अज्ञानी गुरुओं के शरण में जाने पर शिष्य को कुछ भी प्राप्त नहीं होता।क्योंकि जिन गुरुओं को कुछ पता ही नहीं है वह शिष्य को क्या ज्ञान देंगे?वह उसे भी व्यर्थ के कर्मकांडों में उलझाकर उसके जीवन से खिलवाड़ करेंगे।अन्तोगत्वा वह उस परम तत्व के ज्ञान से वंचित रह जायेगा।

8. बाह्यडम्बरों की अपेक्षा स्वयं (आत्म) को पहचानने की बात किन पंक्तियों में कही गयी हैं ?

उन्हें अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर:- बाह्यआडम्बरों की अपेक्षा आत्म को पहचानने की बात निम्न पंक्तियों में कही गयी है -

नेमी देखा धरमी देखा,प्रात करे असनाना।

आतम मारिपखानहि पुजै, उनमें कछु नहिं ज्ञान।।

इसमें कवि का यह सन्देश निहित है ईश्वर प्राप्ति के निमित्त किये जाने वाले नियम,धर्म,तीर्थ,स्नान आदि सभी साधन व्यर्थ हैं। जब तक हम अपनी आत्मा यानि मन को शुद्ध,परिष्कृत नहीं करेंगे तब तक सभी साधन व्यर्थ हैं।

अपने मन में व्याप्त दुर्गुणों और बुराइयों को जब तक हम समाप्त नही करेंगे तब हमें ईश्वर की प्राप्ति असंभव है।

बहुवैकल्पिक प्रश्न

not to be republished © JCERT